International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 315-316

आधुनिकता की अवधारणा

डॉ0 निखिल उपाध्याय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। परिर्वतन से ही नवीनता आती है। जिस प्रकार हर दिन के बाद रात आती है और हर रात के बाद नया दिन, उसी प्रकार परिवर्तन के बाद नवीनता आती है। कामायनीकार प्रसाद भी कहते हैः–

''दुःख की पिछली रजनी के बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात।''[1]

यही प्रक्रिया हमें पुराने से लिये की तरफ ले जाती है और बीते हुये कल से नये कल की शुरूआत का बीजरोपण भी करती है। यही नयापन आधुनिकता का संवाहक है जो हमारे विचारों तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन लाता हैं।

आधुनिक शब्द की उत्पत्ति 'अधुना' शब्द मे 'इक' प्रत्यय से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है– तुरन्त, इसी क्षण, अत्यन्त नूतन। आधुनिक वर्तमान का भी अर्थद्योतक है। आधुनिक में भाववाचक प्रत्यय 'ता' लगने से आधुनिकता बना जो आधुनिक विशेषण का भाववाचक संज्ञा में रूपान्तरण है। 'आधुनिक' शब्द के सूक्ष्म अर्थ भेद के साथ विभिन्न शब्द प्रचलित हो गये हैं जैसे– आधुनिकता, आधुनिकीकरण इत्यादि। इन्हीं शब्दों के लिए अंग्रेजी भाषा में भी कई शब्द प्रचलित हुये। जैसे– माडर्न, माइनाइजेशन, माडर्निटी, माडर्निज्म आदि। सामान्यतः 'आधुनिक' शब्द तीन अर्थों मे प्रयोग किया जाता है– 1) समय सापेक्ष 2) नए का वाचक 3) किसी विशिष्ट दृष्टिकोण या जीवन दर्शन वाचक। डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी यह मानते हैं कि आधुनिकता एक जड़ स्थिति न होकर विकास की स्थिति है, उसकी प्रकृति सदैव गत्यात्मक रहती है। नवीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में अपने आपका संस्कार ही आधुनिकता है। आधुनिकता एक दृष्टि है जो संस्कृति की ग्रहणशीलता तथा उसकी विकासोन्मुखता की परिचायक है इसलिए वह समूची जीवन व्यवस्था को प्रभावित करती है। उसके किसी विशेष खण्ड को नहीं.....। कुल मिलाकर चतुर्वेदी जी आधुनिकता को वर्तमान के सन्दर्भ में भविष्योन्मुखी दृष्टि मानते है।[2] डॉ0 बच्चन सिंह का मानना है कि आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों और औद्योगीकरण का परिणाम है जबकि आधुनिकता औद्योगीकरण की अतिशयता, महानगरीय एकरसता, दो महायुद्धों की विभीषिका का फल है। वस्तुतः नवीन ज्ञान–विज्ञान, टेक्नालाजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषय मानवीय स्थितियों के नये गैर रोमाटिक तथा अभिथकीय साक्षात्कार का नाम 'आधनिकता' हैं।[3] डॉ0 रमेश कुन्तल मेघ '' आधुनिकता बोध एवं आधुनिकीकरण' नामक पुस्तक में आधुनिकता पर विचार करते हुए लिखते हैं कि आधुनिकता तो सामाजिक अवस्था का दर्पण, संस्कृति का मूल्य चक्र, विभिन्न समूहों की चिन्तन पद्धति तथा विभिन्न मनुष्यों की वृत्तियों का एक अमूर्त पैटर्न है।[4]

वास्तव में 'आधुनिक' समय विशेष मे हुये परिवर्तनों का सूचक है, 'आधुनिकता' उन परिवर्तन के प्रभावों तथा उनके प्रति मानवीय आग्रहों का प्रतिफल है। आधुनिकता में एक प्रकार की जीवन दृष्टि का संकेत भी मिलता है, जो मध्य कालीनता से कुछ भिन्न है। ऐसे चिन्तक जो कि प्रगतिवाद में विश्वास करते हैं, इसमें प्रगति की सम्भावनाएं देखते है। आधुनिकता ने जीवन को समग्रता तथा यथार्थ की तरफ ले जाने का उपक्रम किया है। यह सम्पूर्ण रूढ़ियों तथा मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लगाती है परन्तु इस प्रश्नचिह्न की उद्देश्य उन्हें बुद्धि की कसौटी पर कसना मात्र है। डॉ0 कुमार विमल का विचार है कि आधुनिकता अपने आप में कोई मनगढ़न्त मूल्य या एक बिन्दु पर टिका मानदण्ड नही हैं। यह तो एक विकासशील दृष्टिकोण है, एक गतिशील सांस्कृतिक सातत्य है, एक लोचदार जीवन दृष्टि है, युगबोध से निकली एक सशक्त प्रवृत्ति है। वास्तव में विमल जी द्वारा परिभाषित यही प्रवृत्ति सर्वदा मानवीय प्रगति की सूचना देती है और नये परिवेश में अपने आपको समेटते हुए चलती है।

आधुनिकता समय सापेक्ष है। इसकी कोई निश्चित समय सीमा नहीं है। यूरोप में आधुनिक युग 15 वीं सदी में ही प्रारम्भ हो जाता है जबकि भारत में बाद में। हम किसी भी युग के बारे में यह नहीं कह सकते हैं कि वह आधुनिक नहीं था। हर युग बीते युग की तुलना मे आधुनिक होता है। यह अवश्य माना जा सकता है कि आधुनिकता के प्रति सजगता में उतार चढ़ाव होता रहता है। ''आधुनिकता के पहलू'' नामक पुस्तक में विपिन जी कहते हैं– '' आधुनिकता की प्रकृति सूक्ष्म है। इसकी कोई स्थूल, पूर्व निश्चित और अपरिवर्तनीय दिशा नहीं है। आधुनिकता एक खण्डित घटना है जिसका बीती घटनाओं से दूर का सम्बन्ध है।[5] इस सम्बन्ध का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कवि सामाजिक प्राणी होता है। वह समाज में रहकर ही साहित्य का सृजन करता है। कवि समाज से पूरी तरह से हर कर सृजन नही कर सकता है और न ही अतीत को पूरी तरह भूलकर सृजन कर सकता है। इस प्रकार हम यह स्वीकार कर सकते है कि नवीनता के लिए अतीत की जानकारी अपेक्षित होती है।

आधुनिकता के किसी चरण को हम इसकी चरमावस्था भी नही कह सकते हैं क्योंकि आज जो आधुनिक है वह आने वाले कल मे पुराना हो जाएगा। आधुनिकता को शब्दों की सीमा में बांधना कठिन है। कुछ साहित्यकार तो आधुनिकता को अस्वीकार भी करते है। यहां पर प्रो0 रामकिशोर शर्मा की ये पक्तियां प्रासंगिक हो जाती हैं– ''आधुनिकता का अस्वीकार भी आधुनिकता है, यही नहीं इसके स्वीकार एवं अस्वीकार के परे जाना भी आधुनिकता है।''[6] इसका तात्पर्य यह है कि आधुनिकता विचार एवं स्वीकार के लिए पूरी–पूरी वैयक्तिक छूट देती हैं।

आधुनिकता को पूरी तरह से समझने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि उन तत्वों को खोजा जाय जिनके आधार पर आधुनिकता, मध्यकालीनता से अलग हो गयी। मध्यकालीन चिन्तन

प्रमुख रूप से ईश्वर पर केन्द्रित है। इसमें मनुष्य की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गयी है किन्तु इस श्रेष्ठता का महत्व तभी है जब मनुष्य साधना करके या किसी अन्य उपाय से आवागमन से युक्त हो जाय। आधुनिकता में माया की श्रेष्ठता स्थापित हैं। यह युग भौतिकवादी संस्कृति के कारण अर्थ प्रधान हो गया है। 'आधुनिकता' तर्क प्रधान है जबकि मध्य कालीनता श्रद्धा प्रधान थी। यह भी कहा जा सकता हैं कि मध्यकाल में हृदय के साथ बुद्धि चलती थी, अब बुद्धि ही नेता है। जहां एक तरफ मध्यकालीनता में मिथको के परिप्रेक्ष में जीवन को समझने का प्रयत्न किया गया है वहीं आधुनिकता में जीवन का अभिथकीय साक्षात्कार है। मिथकों के अर्थ कों तर्क संगत बनाने का कार्य भी हो रहा है। आधुनिकता ऐहिकता प्रधान है जबकि मध्यकालीनता में पारलौकिकता की प्रधानता थी। आधुनिकता में ऐहिक जीवन के संघर्षो, उपलब्धियों एवं सुख–दुख पर अधिक बल दिया जाता है जबकि मध्यकालीनता मृत्यु के बाद की स्थितियों के लिए अधिक व्यग्र थी।

आधुनिकता के सन्दर्भ मे एक प्रमुख विचारणीय प्रश्न यह भी है– क्या आधुनिकता में परम्परा को पूरी तरीके से अस्वीकृत कर देना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में विभिन्न विद्वानों के अपने–अपने मत हैं। एक पक्ष यह है कि आधुनिकता अपने आप में अलग महत्व रखती है और इसकी पुरातन निरपेक्ष व्याख्या करनी चाहिए। इस पक्ष के लोगों का मानना है कि जो लोग आधुनिकता की स्वतंत्र स्थिति को नही समझ पाते है; वे आधुनिकता की चर्चा के अधिकारी ही नहीं हैं। विपिन अग्रवाल, 'आधुनिकता के पहलू' नामक पुस्तक में आधुनिकता पर विचार करते हुए ऐतिहासिकता के अध्ययन का कम मूल्य मानते हैं किन्तु ऐतिहासिकता को पूरी तरह नकारते नहीं है। इस बात की पुष्टि उनकी इन पक्तियों से होती है– '' मैं यह नहीं प्रतिपादित कर रहा हूँ कि हमें इतिहास या परम्परा को जानना ही नहीं चाहिए ..... इतिहास आवश्यक है क्योंकि उसी के अंश को लेकर हम नए को गढ़ते हैं।[7] कुँवर नारायण जी के विचार से भी आधुनिकता का एक तात्पर्य जड़ों की छानबीन है तो दूसरा तात्पर्य उन कलात्मक अभिव्यक्तियों की जानकारी भी है जिनसे कला का इतिहास बना है।[8] आधुनिकता विगत सांस्कृतिक मूल्यों को अपने अन्दर समेट कर मानव के वर्तमान की स्थिति और उसकी चेतना को स्वीकार करना है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है परम्परा से पूरी तरह विलगाव आधुनिकता नहीं है। परम्परा से वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का अनिवार्य विरोध नहीं है और दोनों ही एक स्तर पर रचनात्मक है। चूंकि आधुनिकता को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता इसलिए आधुनिकता बोध के लिए हमें सावधानी पूर्वक आधुनिकता की सही पहचान करनी होगी। अपनी राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक विरासत का गहन अध्ययन करना होगा। आधुनिकता को न ही परम्परा से पूरी तरह अलग होकर, न विदेशी विचार– धाराओं के पिष्टपेषण द्वारा, और न ही महानगरीय चकाचौंध से प्राप्त किया जा सकता है सही अर्थो में आधुनिकता केवल कुछ विशिष्ट जड़वत परम्पराओं के ही विसर्जन का आग्रह करती है, शेष परम्पराओं को आधार बनाकर उन्हें समसामायिक आवश्यकताओं के अनुकूल ढ़ालने का प्रयत्न करती है। यह एक सतत प्रक्रिया है जो विकास की तरफ उन्मुख रहती है तथा सदैव भूत तथा भविष्य के बीच रहती है। यह अस्थायी है क्योंकि आज जो आधुनिक है वह आने वाले कल से पुरातन होगा।

संदर्भ

1. जयशंकर प्रसाद (कामायानी, श्रद्धा सर्ग, पृ0–36
2. डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी (हिन्दी नक्लेखन, पृ0सं0–13)
3. आधु0 साहित्य का इतिहास (बच्चन सिंह) पृष्ठ–51
4. आधुनिकता बोध एवं आधुनिकीकरण (डॉ0 रमेश कुन्तल मेघ), पृष्ठ–331–32
5. आधुनिकता के पहलू (विनि कुमार अग्रवाल), पृष्ठ सं0– 19
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास (प्रो0 रामकिशोर शर्मा) पृ0– 212
7. आधुनिकता के पहलू (विपिन कुमार अग्रवाल) पृष्ठ–17
8. आज और आज से पहले (कुँवर नारायण), पृष्ठ– 60